6

भारतीय इस्लामिक वास्तुकला

(बारहवीं शताब्दी से सत्रहवीं शताब्दी तक)

Indo-Islamic Architecture

(From 12th Century to 17th Century)

6.0 भूमिका

आठवीं शताब्दी से भारतीय संस्कृति की मुख्य धारा में इस्लामिक संस्कृति का मिलना आरम्भ हो गया था, किन्तु तेरहवीं सदी के प्रारम्भिक वर्षों में दिल्ली सल्तनत की स्थापना को ही भारत के सांस्कृतिक विकास के नये काल का सूत्रकाल माना जाता है। इस काल में भारत आने वाले तुर्क विजेता, जब भारत में आये तो उनके पास उनका धर्म इस्लाम था, जिसमें उनकी गहरी आस्था थी तथा स्थापत्य कला के क्षेत्र में उनका अपना दृष्टिकोण था। दूसरी ओर भारतीयों के भी स्थापत्य कला के विषय में अपने निश्चित विचार थे।

वस्तुतः जब दो पक्षों के अपने–अपने दृढ़ विचार और विश्वास होते हैं, तो एक दूसरे को गलत समझने एवं संघर्ष के पैदा होने की स्थिति हमेशा बनी रहती है। तुर्कों तथा भारतीय स्थापत्य कला से संबंधित लोगों की स्थिति भी इससे अछूती नहीं रही। इस काल में भारत में जब इन बाहरी संस्कृतियों के व्यक्ति आबाद होने लगे तब उनके भवन, मस्जिदें, राजाओं के महल, मकबरे, मदरसे और किलों का निर्माण जो भी भारतीय भूमि पर हुआ उन सबके राज–मिस्त्री तथा कलाकार तो भारतीय ही थे, केवल मुख्य वास्तुकार तुर्क विशेषज्ञ थे। यही कारण है कि भवनों की निर्माण कला में भारतीय तथा तुर्क शैली का मिश्रण दिखायी पड़ता है। तुर्कों की अर्द्धवृतों, गुम्बन्दों तथा मीनारों की शैलियां भी भारतीय प्रभाव में रंग गयी। चौकोर खुदाई वाले खम्बे, बिना मीनारों वाली मस्जिदें तथा छोटे खम्भों पर नुकीले अर्द्धवृत, भारतीय स्थापत्य कला के अन्य उदाहरण हैं।

प्रस्तुत पाठ में हमने मध्य कालीन भारत में इन्डो इस्लामिक वास्तु कला के तीन स्मारकों (MONUMENTS) को ही लिया है जिन की स्थापत्य कला में संस्कृतियों के संगम की सभी विशेषताएं है।

6.1 उद्देश्य

इस पाठ का अध्ययन कर लेने के बाद आप :–

- निर्धारित स्मारकों के नाम बता सकेंगे।
- निर्धारित स्मारकों का सामान्य परिचय दे सकेंगे।
- निर्धारित स्मारकों की वास्तुकलाओं में अन्तर निर्धारित कर सकेंगे।
- निर्धारित स्मारकों की निर्माण सामग्री, उनका स्थान, शैली तथा वास्तुकला की विशेषताएं निर्धारित कर सकेंगे।
- निर्धारित स्मारकों की कला सम्बन्धी विशेषताओं का वर्णन कर सकेंगे।
- इन्डो इस्लामिक वास्तुकला की मुख्य विशेषताओं की पहचान कर सकेंगे।

कुतुब मीनार

6.2 कुतुब मीनार

शीर्षक	–	*कुतुब मीनार*
निर्माण सामग्री	–	*रंगीन, लाल अलवरी पत्थर (क्वार्टज जाइट) तथा सफेद बलवे पत्थर*
निर्माण काल	–	*1206 – 1232 ई.*
निर्माण स्थल	–	*दिल्ली का महरौली क्षेत्र*
आकार	–	*72.56 मी. ऊंचाई.*
वास्तु कला शैली	–	*इण्डो इस्लामिक स्थापत्य कला शैली*

सामान्य परिचय

1206 ई॰ में मुहम्मद गौरी की मृत्यु के पश्चात उसका तुर्क गुलाम कुतुबुद्दीन ऐबक दिल्ली का सुल्तान बना। वह भारत का पहला तुर्क सुल्तान था। कुतुबुद्दीन ऐबक को भवन निर्माण में भी रूचि थी। उसने दिल्ली में कुतुब मीनार को **विजय स्तम्भ** के रूप में बनवाना शुरू किया था। अपने शासन–काल (1206 से 1210 ई0) में कुतुबुद्दीन ऐबक केवल पहली मंजिल का ही निर्माण करवा सका था। बाद में मीनार को इल्तुतमिश बादशाह ने पूरा कराया। यह मीनार तुर्क तथा भारतीय वास्तुकला शैली के संगम का अच्छा नमूना है। इसकी प्रत्येक मंजिल पर बाहर निकले लटकते छज्जों का मजबूत निर्माण, पत्थरों में खोदकर अरबी भाषा की लिखावट तथा मीनार में ऊपर चढ़ने के लिए घुमावदार 379 सीढ़ियां अपनी विशेषताएं लिए हुए हैं। भारतवर्ष की यह मीनार सबसे ऊँची मीनार है जो **72.56 मीटर** ऊँची है। संसार में इसकी कोई बराबरी नहीं है। सन् 1336 तथा सन् 1386 में दो बार इस मीनार की ऊपरी मंजिल, भयंकर काली आँधी तथा आसमानी बिजली से टूट गयी थी। तत्कालीन सुल्तानों ने तब उसकी मरम्मत करा दी थी। कुतुबमीनार इण्डो इस्लामिक स्थापत्य कला शैली के अंगों जैसे शंखाकार आकृति, छज्जों को सहारा देती हुई मजबूर पट्टियां, ज्यामितिक सजावट, अरबी भाषा में पत्थरों में खुदी लिखावट आदि का सुन्दर नमूना तो है ही, साथ में भारतीय वास्तुकला शैली के शुभ चिन्हों की सजावट भी देखने योग्य है। कुतुब मीनार की पहली मंजिल का व्यास नींव पर 14.3 मीटर तथा अन्तिम मंजिल की चोटी का व्यास 2.8 मीटर है। कुतुब मीनार की पहली मंजिल का बाहरी भाग कोणीय तथा अर्धवृत्ताकार है। दूसरी मंजिल गोलाकार है। तीसरी मंजिल का बाहरी कलेवर कोणीय है। प्रत्येक मंजिल की बाहरी सजावट के मोटिफ भी विविध हैं।

पाठगत प्रश्न (6.2)

1. सही उत्तर छाँट कर लिखें –

(क) कुतुब मीनार जिस प्रतीक के रूप बनी है वह है –

(i) विजय (ii) प्रेम (iii) धर्म

(ख) कुतुब मीनार की ऊपरी मंजिल में लगाया गया है –

(i) सफेद बलवा पत्थर (ii) संगमरमर (iii) ईंट

(ग) कुतुब मीनार निम्नलिखित वास्तुकला शैली का उत्तम उदाहरण है :–

(i) मुगल शैली (ii) हिन्दू शैली (iii) इन्दोतुर्की शैली

ताज महल

6.3 ताज महल

शीर्षक	–	*ताज महल*
निर्माण सामग्री	–	*संगमरमर, चूना, बाजरा–कंकर, शीरा, रूमी मस्तगी, बेल गिरी, (जूट), सन के टुकड़े, गोंद*
निर्माण काल	–	*सन् 1628 से 1654 तक*
निर्माण स्थल	–	*आगरा, उत्तर प्रदेश (यमुना नदी के किनारे)*
आकार	–	*नींव योजना – 580 वर्ग मीटर x 305 वर्ग मीटर; ऊंचाई- 187'*
वास्तुकला शैली	–	*इण्डो इस्लामिक वास्तु कला शैली*

सामान्य परिचय

ताज महल भारतीय इस्लामिक स्थापत्य कला की महानतम उपलब्धि है। बादशाह शाहजहाँ ने अपनी पत्नी मुमताज महल की यादगार को कायम रखने के लिए ताजमहल का निर्माण कराया था। पत्नी के लिए प्रेम के प्रतीक के रूप में आज भी यह भवन पूरे विश्व में प्रसिद्ध है। ताज महल विश्व के सात आश्चर्यों में से एक है। शाहजहां की इच्छा के अनुसार ताजमहल में उसकी बेगम तथा स्वंय बादशाह की दो कबरें हैं। वैसे कबरों पर बने भवनों को मकबरा कहा जाता है मगर शाहजहां ने अपने जीवन काल में ही अपनी बेगम के नाम में से "मुम" हटाकर इस भवन का नाम बेगम के नाम पर ताज महल कर दिया।

स्थापत्य कला के विशेषज्ञों के अनुसार भवन की नींव के लिए गहरे कुँऐ खोदकर उनकी चिनाई ईंटों से तथा भराव चूने से किया गया। नींव के सारे भराव को रसायनों द्वारा वाटर प्रुफ बनाया गया। नींव पर भवन के भार को एकदम सन्तुलित रखा गया है। प्राकृतिक आपदा जैसे बाढ़ के पानी का भवन से टकराना, भूचाल से भवन का हिलना, आकाशीय बिजली तथा भयंकर आंधी और तूफान, गर्मी तथा सर्दी, भारी वर्षा आदि के बुरे प्रभावों से भी ताज को इसके वास्तुकारों ने बचाकर रखा है।

ताज महल के मुख्य भवन का क्षेत्रफल 313 वर्ग फीट है। इसका बीच वाला बड़ा गुम्बद 186 फीट ऊंचा है तथा भवन के चारों कोनों पर बनी चारों मीनारें 163 फीट ऊंची है। भवन में बने दोहरे परत के गुम्बद, मीनारें, मेहराब तथा बालकनी आदि पच्चशयन वास्तु कला शैली के सुन्दर नमूने हैं। अरबी भाषा की लिखावट शुद्ध अनुपात में पत्थरों में खोदकर भवन में उचित स्थानों पर लगायी गयी है। भवन के अंगों का आपसी अनुपात पच्चशयन शैली की मुख्य विशेषता है।

ताज महल को सजाने के लिए, पच्चशयन नक्काशी की "प्येत्रा–दयूरा" शैली को अपनाया गया है। इस शैली में फूल, पत्तियों को नील मणि तथा फीरोजा जैसे कीमती पत्थरों में से काटकर, संगमरमर में उन्हीं आकारों की खुदाई करके, उन खाली स्थानों में, फूल, पत्तियों को मसाले से पका कर चिपका दिया जाता है।

पाठगत प्रश्न (6.3)

रिक्त स्थानों की पूर्ति करो।

(i) बादशाह शाहजहाँ ने अपनी पत्नी.....की .....को कायम रखने के लिए ताजमहल का निर्माण कराया था।

(ii) ताजमहल .....में .....नदी के किनारे स्थित है।

(iii) विशेष प्रकार के .....पत्थर ताजमहल के निर्माण के लिए उपयोग में लाया गया है।

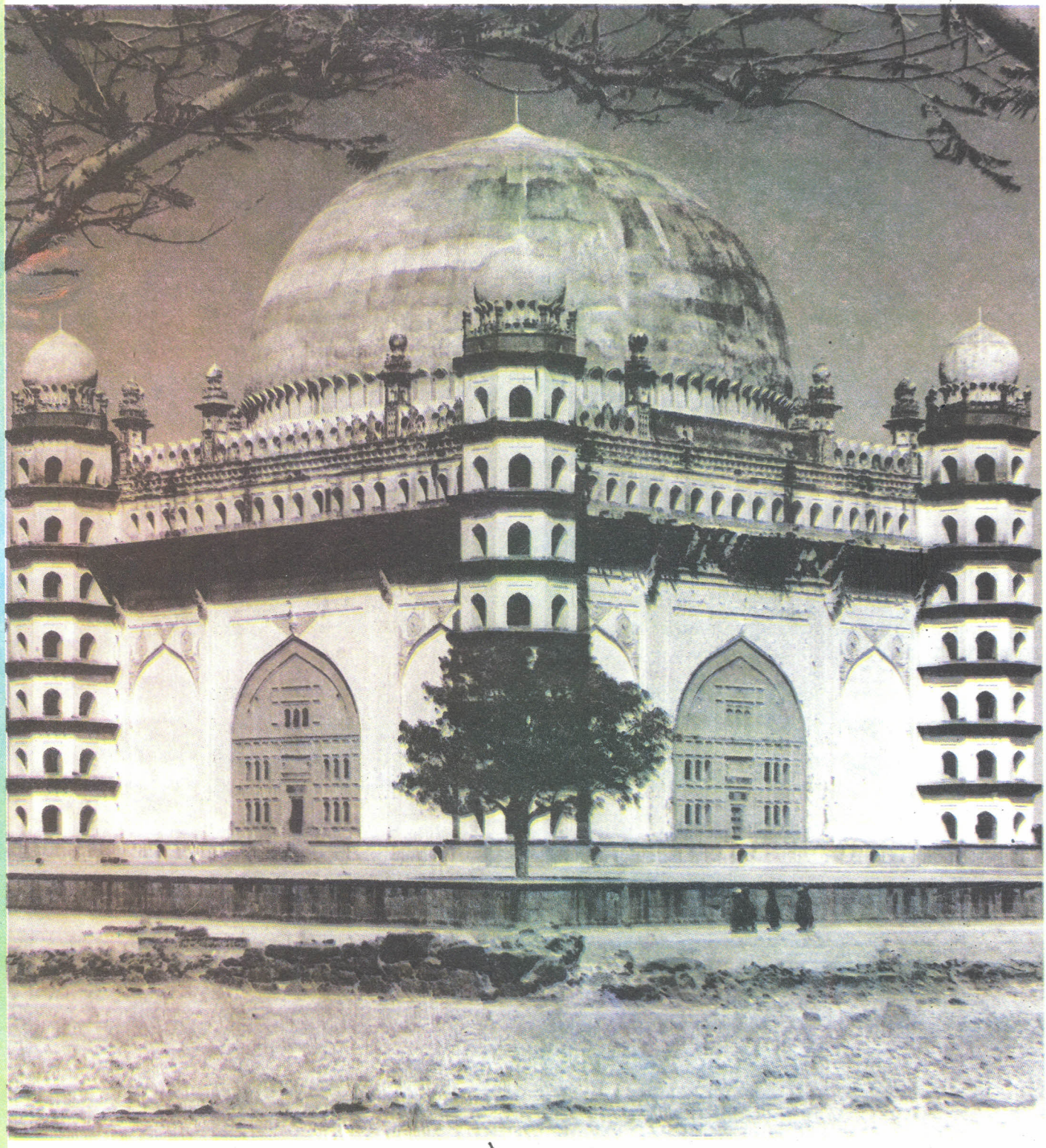

गोल गुम्बद

6.4 गोल गुम्बद

शीर्षक	–	*गोलगुम्बद*
निर्माण सामग्री	–	*पक्की ईंट*
निर्माण काल	–	*17 वीं शताब्दी*
निर्माण स्थल	–	*बीजापुर, कर्नाटक राज्य*
आकार क्षेत्र	–	*1600 वर्ग मीटर।*

सामान्य परिचय

दिल्ली के सुल्तान मोहम्मद बिन तुगलक (1325-1351 ई॰) का जब अपने शासन काल के अन्तिम वर्षों में दक्षिण भारत पर अधिकार कमजोर हो गया, तब सुल्तान के एक शक्तिशाली अधिकारी "हसन गंगू" ने, इस कमजोरी का पूरा लाभ उठाकर, दक्षिणी भारत के बहमिनी प्रान्त को स्वतन्त्र राज्य घोषित कर दिया और गुलबर्ग नगर को अपनी राजधानी बना लिया। बीजापुर भी बहमीनी राज्य का एक शक्तिशाली नगर और प्रान्त था। बीजापुर राज्य का अन्तिम शासक मुहम्मद आदिल शाह था। उसने ही बीजापुर में गोल गुम्बद का निर्माण कराया था। गुम्बद के भीतर दो कबरें हैं।

निर्माण शैली

इण्डो–इस्लामिक स्थापत्य कला शैली में बनाया गया यह गुम्बद, संसार के गुम्बदों में सबसे बड़ा गुम्बद है। गुम्बद के चारों कोनो पर 8 भुजा वाली 4 मीनारें हैं जिनमें सात–सात मंजिलें हैं। भवन के अंदर का क्षेत्रफल 1600 वर्ग मीटर है। इसका गुम्बद अन्दर से खोखला है। खोखला गुम्बद बनाने के लिए पत्थर या ईटों की जुड़ाई करना जरूरी है। इसके लिए चूने के घोल से पत्थर या ईंटों की मजबूत जुड़ाई की गई है। मेहराब और गुम्बद बनाने के लिए चूने और गारे के घोल का प्रयोग सल्तनत काल में बाहर से आये कारीगरों द्वारा शुरू किया गया था। परशियन कारीगर ही ईंट तथा पत्थर के टुकड़ों को चूने से जोड़–जोड़कर ऐसे गुम्बद बनाते थे। पहला गुम्बद बनाकर उस पर ठोस मिट्टी का मोटा लेवा या प्लास्टर लगाया जाता था। फिर ऊपर वाला बाहरी गुम्बद बनाया जाता था। गोल गुम्बद का निचला गुम्बद गोल तथा ऊपर वाला गुम्बद संकीर्ण तथा नुकीला है।

पाठगत प्रश्न (6.4)

(1) सही उत्तर छाँट कर लिखें।

(क) गोल गुम्बद बनाने में निम्नलिखित सामग्री का प्रयोग किया गया–

(i) संगमरमर (ii) पक्की ईंट (iii) ग्रेनाइट

(ख) इसे बनानेवाले सुलतान का नाम है:–

(i) इब्राहिम आदिल शाह (ii) मुहम्मद आदिल शाह (iii) यूसूफ आदिल शाह

(ग) गोल गुम्बद जिस शहर में स्थित है उसका नाम है:–

(i) आगरा (ii) बीजापुर (iii) गोलकोन्डा

6.5 सारांश

पाठयक्रम में अध्ययन हेतु निर्धारित तीनों ऐतिहासिक स्मारकों का अध्ययन करने के उपरान्त इस बात का पता चलता है कि भारत वर्ष का मध्यकालीन इतिहास बड़ी राजनैतिक उथल पुथल से भरा पड़ा है जिस में सांस्कृतिक आदान प्रदान बड़े रूप में हमारे सामने आता है। भारत में भवन निर्माण कला के क्षेत्र में मेहराबें, गुम्बद तथा अच्छे चिनाई के मसाले बनाने के नियम तुर्क भवन निर्माण तकनीक की देन हैं। मुसलमान बादशाहों द्वारा निखमत भवनों की सजावट में स्वास्तिक, घन्टी, कमल और कलश भी देखे जा सकते हैं, जो शुद्ध भारतीय प्रतीक हैं। मकबरों, महलों, मीनारों, बुलन्द दरवाजों तथा किलों आदि का निर्माण उस काल में हुआ तथा उनके आस पास उद्यान विकसित किए गए। उस काल में भवनों की मजबूती पर विशेष ध्यान दिया जाता था।

6.6 माडल प्रश्न

1. तुर्क वास्तु कला की शैली को ध्यान में रख कर कुतुब मीनार की वास्तुकला की विशेषताओं का वर्णन कीजिए।
2. ताज महल को मुगल वास्तुकला का अच्छा नमूना मानने के तीन कारण लिखो।
3. बीजापुर के गोल गुम्बद का विशाल गुम्बद दोहरा गुम्बद है इसको ध्यान में रखकर दोहरे गुम्बद बनाने की शैली का रेखांकन तथा वर्णन कीजिए।

6.7 पाठगत प्रश्नों के उत्तर

6.2	(क)	विजय	(ख)	संगमरमर	(ग) इंडो–तुर्की शैली
6.3	(क)	मुमताज महल, यादगार	(ख)	आगरा, यमुना	(ग) संगमरमर
6.4	(क)	पक्की ईंट	(ख)	मुहम्मद आदिल शाह	(ग) बीजापुर

6.8 शब्द कोश

(1) इन्दो इस्लामिक – भारतीय तथा मुसलिम शैली के मिलन से प्राप्त नयी शैली

(2) सुल्तान – मुसलिम शासक, राजा

(3) मेहराब – विशेष आगरा की मीनार

6.9 क्रिया तथा योग्यता विस्तार

दिल्ली, आगरा तथा बीजापुर की सैर पर जाकर वहां कुतुब मीनार, ताज महल तथा गोल गुम्बद जैसे एतिहासिक भवनों को देखने का अवसर निकालें।